—2. N यस्यां वा.—A, S तथैव, D, N तनैव, changed by me into तवैव.—D, N प्रदेशेन for न संदेश:—3. D, N असित for अते.—A, S om. रजा, and r. further धनापपीडां च्पसंविजनां स्व नाश्येद्रतः; N जनपदादीनां; not being able to trace the true r. in A, S, I give the other, although likely not the original one.—D, N अस्विरात्—N अस्वं विसंताना, D अस्वभिष मथुस्तं ताने; A, S संकुलं, changed by me into संकुला.—4. D, N द्वयं वर्ष पि कि दिनद्वयं वापि —A, S ॰ वहा.—A, N, S हता.—D पंडितकानां for विच॰.—6. N रजा बज्जतमस्, D रजीधमितबहस्स् D, N तिसन्देशे नि॰.—7. A रजनिभवे for रजिस भवेत्.—S पंचराव.—The substance of this distich is contained in two distichs with D, N, viz. पति (MSS. पतिते) विरावमयाहतं यदा यस्य नरपतेनेगरे (D ॰ भीगात)। दुर्भिचमतुस्त्रमभिभवित तव चाराकुल्लं च (D चारकुलं चिति)॥ ०॥ चण्दास्तस्य एव पतित परागे (D रजनीचतुष्कमभिभवित) यदा खपरसैन्थेः (D सपर-सेनाभिः)। सैन्यचाभं विद्यान्महाभयं (D सीन्यचाभकरभिष सहद्वयं) पंचरावभवे.—8. (in D, N 9) D, N तीव्रफलदात्व.

## CHAPTER XXXIX.

A, S समुपयाति.—A पतित for भवति.—B, D, N खगविरतः—3. D, E, N राजापजीविना.—A, S (च)पि, D तु for च.—4. E रावेर्.—N ॰च सलान्.—The title in A, S is निधातफड़ां.—The number in A, C is 37, in B, D 39, in E च्छादश्रविंशः—

## CHAPTER XL.

2. C, B, D, N निरीचित.—3. A, S निःपत्ति॰.—A खतीव ग्रीयासस्यानां, the last word also in S; D, E ग्रेयासस्यस्य.—4. A, S गतयोवा तिवःपत्तिर.—9. A, S निःपाद्येद्.—10. S, E यामित्र.—A, S सस्यविनाम.—11. S अर्थ for खर्घ, but if the former was meant, he would write अर्थ.—12. After this distich A, S, N insert: एतेनैव तु विधिना सिष्टनस्थे भास्त्ररे परिज्ञेयं। प्राटट्कासमिल्लं बलावलज्ञेः प्रयत्नेन (N परिज्ञेयं) ॥—13. S, E, N समर्थम्, in C not clear, but he explains it by खल्पमूल्य.—D खमया॰, E जपया॰, C knows both r. खमया॰ and जमया॰, the rest जमया॰.—The number of the Ch. in A, C is 38, in E 39, in B, D 40, in S, N om.

## CHAPTER XLI.

2. N चनक, E चणक for राखक; S राखयनकानां.—4. A, D पनकंद. —5. A ॰ भी कुलत्याः, S ॰ भी कुलित्याः—A कुलाय.—A निःपानाः—C, D, E